NH Debate - 37

हरियाणवी बोलनी नहीं, सीखनी नहीं, बोलने वालों का आदर करना नहीं, लेकिन हरियाणवी समाज और संस्कृति के विद्वान् होने की डिग्री जरूर चाहिए|

जितने भी हरियाणवी समाज को सुधारने के ठेकेदार बने फिरते हैं इनमें से अधिकतर ऐसे हैं जिनको ना ही तो हरियाणवी बोलना पसंद और ना ही हरियाणवी बोलने वाले पसंद| हमारे समाज को गहनता से जानने के लिए ना ये हरियाणवी सीखना चाहते और ना हरियाणवी के किसी भी पहलु को सराहना चाहते| बस चाहते हैं तो हरियाणवियों की छाती पे बैठ मूंग दलना|

क्रोध तब उठता है जब ऐसे-ऐसे राज्यों से उठके आये हुए लोग (कुछ तो महानुभाव हरियाणवी भी हैं) यहाँ समाज-सुधार, पाखंड-आडम्बर के ऐसे भाषण झाड़ते हैं जिनपे कि इनके गृह-राज्यों में मानवाधिकारों व् महिलधिकारों की दुर्गति की सड़ांध पूरे देश में महसूस होती है| क्या ऐसे पाखंडी-ढोंगी समाज सुधार वालों के खिलाफ जिनको ना हमारी हरियाणवी का, ना हमारे हरियाणा का किसी का भी ना आदर करना ना शृद्धा की नजर से देखना और ना ही कुछ सीखना; बस सरकार से फंड ढकारने के नाम पर एन. जी. ओ. खोलना और खाते भरना आता है; ऐसे लोगों पर लगाम नहीं लगनी चाहिए?

मैं समझ सकता हूँ कि समाज सुधार कोई भी कर सकता है, परन्तु अब ऐसे समाजसुधारियों का बहिष्कार होना चाहिए जो हरियाणा को सुधारने का ठेका उठाते हैं परन्तु ना हमारी हरियाणवी सीखनी इन्होनें, ना ही इसका आदर करना और ना इसके बोलने वालों का आदर करना| बस इनको तमगा दे दो हरियाणा के समाज पे पी. एच. डी. होने का, बैठे बिठाये|

जरूर मुम्बई व् महाराष्ट्र में भाषावाद और क्षेत्रवाद के पनपने के ऐसे ही कारण रहे होंगे| सरकारों से अनुरोध है कि ऐसे लोगों पर लगाम लगाई जाए ताकि भाषावाद और क्षेत्रवाद से आदिकाल से दूर रहे इस क्षेत्र में ये बीमारियां जड़ें न पकड़ लें|

और देश के दूसरे क्षेत्रों में आ के या जा के समाज सुधारक बनने के लिए इनको सिखाया जाये कि समाज-सुधार के क्षेत्र में आपकी नीयत और सीरत तभी सच्ची मानी जाती है, आपकी बात का प्रभाव और इसकी सुनवाई तभी होती है, जब आप वहाँ की भाषा, शैली, जनमानस व् संस्कृति को तवज्जो देते हों और उनको सीखने और धारण करने का भी जज्बा रखते हों| इतनी सी बेसिक बात इनको आती नहीं तभी तो बात बनती नहीं|

Phool Kumar Malik - Nidana Heights - Dated: 26/01/14